ब्राह्मण है चोटी शुद्र है पाँव

शुद्र से ब्राह्मण जो बनते

वो ही देवता कहलाते

इंद्रसभा है पावन आत्माओं की सभा

पतित शुद्र जो उसमें लाये

लगे उसे फिर पाप

फूलों की बगीचे में चलना है तो

काम क्रोध के कांटे है निकालने

कर्म न ऐसा कोई करना

जिससे मिले कोई श्राप

सचखण्ड का मालिक बनना है तो

करों झूठ खण्ड का किनारा
अमृतवेले के आदि समय पर

ही मिलता परमात्म स्नेह

जो करते उसको धारण

होते कहीं ओर न आकर्षित

माया के भिन्न- भिन्न रूप करते आकर्षित

अगर दिल में पूरा सच्चा स्नेह नही

सच्चे स्नेही बन परमात्म प्यार से रहो भरपूर

व्यर्थ की हथौड़ी से समस्या के पत्थर मत तोड़ो

हाई जम्प दे समस्या के पहाड़ को पार करो

मेरा बाबा

ॐ सुमंत्रि।।